परिशिष्ट क

नवदुर्गा नाटक

जैसा कि अन्यत्र संकेत किया जा चुका है कि यह नाटक नहीं किन्तु नाट्य प्रयोग है, जिसमें रंगपीठ, रंगशीर्ष, नेपथ्य, स्तम्भ आदि की तांत्रिक रीति से पूजा-विधियां बतायी गयी हैं। भाषा नेवारी ही प्रयुक्त हुई है, वैसे कहीं कहीं संस्कृत भी दृष्टिगोचर होती है। इसमें केवल २५ पत्र हैं। पत्र संख्या ३, ६, ७, १५, १६, १८, २०, २२, २३ पर क्रमश: तालपत्र बंधन विधि, देवार्चन विधि-परिपाति, ततो मोहनी मंडलपालवेत्, ततो नृत्यशक्ति देवी पूजनं, ओम् एं-५ ब्रह्मायणी देवी पादुकां पूजयामि, ओम् हूं गणपतये वलिं गृण्ह गृण्ह स्वाहा, आदि मंत्रों का उल्लेख है। पत्र १२, १३, २२ और २४ पर निम्नस्थ प्रकार से तांत्रिक अक्षर लिखा गया है -----

प्रारंभ -------- ओम् नम: नाटेश्वराय । नवदुर्गा देव्यै नम: ।
अथ नवदुर्गा नाटक क्रम लिख्यते ।। आषाढ मण्डलं कारयेत् ।
नाटेश्वर पंचोपचार पूजा युकोन थाय ।। चूपे पूजा पशु तर्पण ।
तारणाया चक्रे समय विय । दक्षिणाय चक । चेतसिन्धुर ।
एकानक । देव आशीर्वाद । अम्बे पूर्ण स्वान कुकाय । स्वान विय ।
मज्जां ताप्यं वलि विसर्जनयाय । साक्षि थाय । देव स्वान यडाक्प्या-

२

नखन क्लेस देवरानेने । चेतसि ध्नते चके । जजो मकानको साय के स्वान छाय रंगमंडप कामदेव स्वने आशन वलिपात क्वितयाव । स्व स्व मूल मंत्रेण पूजयेत् । न्हिथं स्वान केताने माल । मतं वियेमाल । आगण केतन्ने माल । थ्यते आरंभना । देवल्हास्यं स्व स्व आग्न सतय । - - - - - - आदि

अंत -------- पशु तर्पण । मंत्र । थ्यनकोर तोक काय । गुप्तयाय मालप्रकाश जुरसा थवके दिय फव । थ्य घुनड ाव । थ्यगुलि राम मांत्वाहूति विधिप्यं । सुवान त्वाय । पूर्णाहूति । - - - - - - - थ्यते घुनड ाव क्षशलं स्वयाव दुंतायने थना विल भोजन । थ्यते दशमि कुन्हु । इति नवदुर्गा नाटक सम्पूर्ण समाप्त: । शुभं । संवत् ८०६ अषाढ़ कृष्ण अष्टमी । श्री श्री सुमति जय जितामित्रमल्ल देवसन थ्यसा फूल दयका ।।

इस रचना को अंत के वाक्य के आधार पर ही नाटक मान लिया गया है ।

परिशिष्ट ख ।

जैमिनीय भरत नाटक ।

जैसा कि पहले निर्दिष्ट किया जा चुका है कि प्रस्तुत नाटक की रचना जयदेव की भाषा-शैली के अनुकरण पर संस्कृत एवं नेवारी भाषा में हुई है । मैथिली का एक वाक्य भी व्यवहृत नहीं हुआ है, अत: इसकी गणना मैथिली नाटकों में नहीं हो सकती । इसमें, मदालसा हरण की भांति ही, वाक्यों के मध्य ताल-मात्राओं का

३

प्रयोग हुआ है । इसमें गीत और नृत्य दोनों का मिश्रण है ।

प्रारंभ ----- ओम् नम: श्री नाटेश्वराय । नान्दी मे ।। मालव ।।

ज ज थ प्र ।।

त्रिभुवन नायक तांडव नृत्य रतं विधुवर विरक सुवेशं,

विदित नटवर भपिंगजतं ललितहार भुजगेशं ।

--- --- --- --- ---

बहति जटा तटे गांगजलं विमलं सहृदय हृदय हारि -

सुमतिजितामित्र कृत हर वर्णनं परि सुखयतु भक्त जनं ।

-- -- -- -- -- ।। संगीत ।। दृग् त त् त त स्था-२

दृग थगि नांदिं कृतत कृथै धिगि दिधि गिनां तथै तथै थै थैतत्

त त हथा -- -- -- -- --

सुनय विनय युतं विदित धरेशं, रविकुल मंडन मदन सुवेशं ।

नरपति पूजित जितरिपु वीरं, रसिक जितामित्र सुमति सुधीरं ।

वितरण कर्म्म रतं याचवे नियतं, कुरुते गणेशो नृपवर्णनं सततं ।

अंत -----

जीवन चपलं जानिहि द्रविण सदनं हि विफलं ।। ध्रु. ।।

स्वीयाभिमानेन मूढ़ा भ्रमन्ति बुधा: ,

तुरग वारणादिकं ममेति मुधा ।

आविल करोमि मुधा हि भजनं,

गिरि सुता चरणं शरणं ।।

इति जैमिनी भारतो गितं समाप्तम् ।। संवत् ८१० पौष सुदि ३ व्यान्हन आलंभ याह ा दिन ।। श्री श्री सुमति जयजितामित्रमल्ल देवेन नाटकं सिद्धम् ।। श्री श्री भूपतीन्द्रमल्ल देवस्य न दयका

४

जुरो संवत् ८०६ चैत्र सुदि १३ घंटिज्या आलंभ याड १ दिन ।।
संवत् ८०६ श्रावण सुदि १ घुटिज्या घुनका दिन ।।

परिशिष्ट ग

रामायण नाटक के कुछ गीत -----

१. तुअ मुख देखि मन मगन मोर,
हरखित करू प्रिये नयन चकोर ।
शशिमुखि मानह चंचल प्रमान् ,
तोहर अधीन मेल हमर परान ।
हृदय हनय सुनु अति पंचवान,
चंचल नयन हेरि देहु जीव दान ।
सुमति जिताभित्र नरपति भान,
हर तेजि सुगमनि परिहर मान ।

२. सुन्दर आनन अपरूब कांति,
अलके जितल जनि मधुपक पांति ।
उरज उनत तुअ गिरिवर तूल,
चरन जितल जनि कमलक फूल ।
से देखि मन मोर उपजल दंद,
उगल लता जनि पुनिमक चंद ।
कहय जिताभित्र मने सुनि बेरि,
करह विमुख मुख अवसर हेरि ।

५

३. जानकी सुन्दरि चलह सुगमनि चंचल लोचनि प्रिये केलि भवने ।
मान जनु करू प्रिये वारा सुन्दरि आज ।। ध्रु. ।।
सुमुखि मोरा हृदय चंचल जान, मानि तोहर निजवस मेल परान ।
हेरि नयना भरि राखह परान, वारागमनी तोहँ प्राण समान ।
भूपजिता मित्र सुमति भान, विद्रुम अधरे प्रिये परिहर मान ।

४. शशधर वर मुखि हरिनक नयने,
तुअ कुच सिरीफल सिखार दशने ।
मदन वेदन प्रिये दुर करू आज,
गमने जितल तुअ वारन राज ।
अनुगत जने जानि करू अवधान,
किसलय अधरे राखह परान ।
सुमति जितामित्र ई रस भान,
वर तरू मानिनि परिहर मान ।

५. पहु हमे बालिका सरूप किछु कहय न जाय ।। ध्रु. ।।
नवीन लवंग लता तनु न सहय अलिभार,
मानि विनती मोर करू नाथ समय देखि विचार ।
दिवाकर कुल मन्द नरपति वीर सुजान,
नागर रसिज मुख तुअ सम केउ नहि आन ।
जय सुमति जितामित्रमल्ल नृपवर भान,
बुझय विदित जन सबे जे होअ रसिक सुजान ।

६

परिशिष्ट घ

भाषा नाटक के दो गीत -----

१. ।। धनाश्री ।। चौ ।।

सुनु नागर पहु विनु जीवन असार,
मरम हनय मोहि मार ।। ध्रु.।।
नयन हेरिय तनु प्राण संजोग,
पुनु जीवन राखह हमार ।
कुच सिरिफल धए दयिय आनन्द,
मो करब सुरत विलास ।
भूपतीन्द्रमल्ल मन पहु जगमोहन,
गोचर करू अवधान ।

२. करह मोहि दानं ।। ध्रु. ।।

तोहैं प्रभु नागर सब गुन आगर, रूपे मदन समानं ।
सोलह चउगुण कलाक आगर, रसिक गुणगण जान है ।
नारि अलप मति आन नहि गति, कामे दहत सरीर ।
जनम सफल कर आज पहुमोर, श्री भूपतीन्द्र मन वीर है ।